

सा हनी ऑटोमोबाइल नाम से दिल्ली में दोपहिया गाड़ियों के दो आउटलेट चलाने वाली एक कंपनी है रिसोर्सफुल ऑटोमोबाइल, जिसके कुल 8 कर्मचारी बताये जाते हैं। अकेले दिल्ली में ही न जाने कितने ऐसे शोरूम हैं। पर हाल में यह कंपनी खूब चर्चा में रही। दरअसल, शेयर बाजार में इस कंपनी का आईपीओ आया और उस पर निवेशकों की प्रतिक्रिया ने सबको चकित करके रख दिया।

यह 22-26 अगस्त 2024 के बीच खुला एक एसएमई आईपीओ था, जिसमें कंपनी कुल 11.99 करोड़ रुपये की पूंजी जुटाने वाली थी। पर इसकी तुलना में कंपनी को 418.82 गुना आवेदन मिल गये, यानी लगभग 4,769 करोड़ रुपये के। खुदरा निवेशकों (रिटेल) की श्रेणी में तो 496.22 गुना आवेदन मिले। यह एक बानगी है कि इस समय शेयर बाजार में आईपीओ की कैसी आँधी चल रही है, लोग किस तरह बिना सोचे-समझे दीवानों की तरह किसी भी आईपीओ के पीछे भागे जा रहे हैं, और उसमें भी खास कर एसएमई श्रेणी की कंपनियों के आईपीओ के पीछे।

अब आप यह जान कर और भी हैरान हो जायेंगे कि जिस आईपीओ में निवेशकों से लगभग 419 गुना आवेदन मिले, एक्सचेंज पर सूचीबद्ध (लिस्ट) होने के बाद उसका शेयर कैसा चला। जब यह 29 अगस्त को बीएसई एसएमई पर सूचीबद्ध हुआ तो उसे कोई बड़ी उछाल (लिस्टिंग गेन) नहीं मिली। पहले 2 दिन यह थोड़ा ठीक चला और किसी तरह इश्यू भाव से ऊपर टिका रहा, पर उसके बाद लुढ़कने लगा और यहाँ तक कि अगले कई दिन तो इसमें निचले सर्किट भी लगे हुए दिखे।

यहाँ तक कि 30 सितंबर को यह 61 रुपये के स्तर तक फिसला, यानी आईपीओ भाव से लगभग आधे पर। तो क्या ये 419 गुना आवेदन हवा-हवाई थे? यहाँ तक कि आईपीओ के समय मीडिया में खबरें चल रही थीं कि इसका ग्रे मार्केट प्रीमियम 89% चल रहा है।

वैसे राम जानें कि यह ग्रे मार्केट चलता कहाँ है, किस प्लेटफॉर्म पर इसकी बोलियाँ लगती हैं और भाव ऊपर-नीचे होते हैं? पर फ्लौदी के सट्टा बाजार और आईबी के चुनावी आकलनों की तरह मीडिया में इस ग्रे मार्केट प्रीमियम की बड़ी चर्चा होती है!

मगर सवाल है कि जिन निवेशकों में आईपीओ में आवेदन करने का इतना जोश था, जो ग्रे मार्केट में लगभग दोगुने का प्रीमियम देने को तैयार थे, वे लिस्टिंग के बाद कहाँ उड़नछू हो गये? क्या इसमें

आईपीओ की आँधी

सावधान! बाजार का मौसम कभी भी बिगड़ सकता है

शेयर बाजार ने हाल में नये रिकॉर्ड स्तरों की ऊँचाइयाँ हासिल की हैं। लार्जकैप, मिडकैप, स्मॉलकैप सभी तरह के शेयर खूब चले हैं, दौड़े हैं, कुछ तो उड़े भी हैं! उचित मूल्यांकनों की बातें करना बाजार में हास्यास्पद लगने लगा है। और ऐसे ही माहौल में हमेशा आती है आईपीओ की आँधी। ऐसा कोई पहली बार नहीं हुआ है। तो इसके परिणाम क्या पिछले अनुभवों से अलग होंगे? प्रस्तुत है भारतीय बाजार में चल रही आईपीओ की आँधी पर राजीव रंजन झा का विश्लेषण।

कुछ ऐसा गणित रहा है, जिसमें दो जोड़ दो चार नहीं होता? यह कोई इकलौता किस्सा नहीं है। हाल में ऐसे एसएमई आईपीओ की भरमार रही है, जिनमें दो जोड़ दो चार नहीं दिखता है। सितंबर में ही ट्रैफिकसोल आईटीएस टेक्नोलॉजीज के आईपीओ के बाद लिस्टिंग से ठीक पहले बीएसई ने दखल देकर 17 सितंबर को होने वाली इसकी लिस्टिंग टाल दी। एक्सचेंज की ओर से बताया गया कि कुछ प्रश्नों (क्वेरीज) के समाधान कंपनी ने अभी नहीं किये हैं, इसलिए लिस्टिंग टाली जा रही है।

इंटेलिजेंट ट्रासपोर्ट सिस्टम (आईटीएस) और ऑटोमेशन के क्षेत्र में सक्रिय इस नोएडा स्थित कंपनी का एसएमई आईपीओ 10-12 सितंबर के बीच खुला था। इसके 44.8 करोड़ रुपये के आईपीओ में 345.65 गुना आवेदन आये थे। इस आईपीओ में बोली लगाने का दायरा 66-70 रुपये के बीच रखा गया था। कुछ खबरों के मुताबिक लिस्टिंग की तय तिथि से पहले तक इसमें 135% का ग्रे मार्केट प्रीमियम चल रहा था, जो लिस्टिंग टलने की खबर के साथ शून्य हो गया।



भारत में पब्लिक इश्यूओं से जुटायी गयी राशि (करोड़ रु.)

अवधि (अप्रैल-सित)	आईपीओ (एसएमई सहित)	एफपीओ (एसएमई सहित)	ओएफएस (एसई) (इन्विट/रीट-ओएफएस सहित)	क्यूआईपी (एसएमई/ इन्विट/रीट-क्यूआईपी सहित)	आईपीपी	इन्विट/रीट	कुल इक्विटी	पब्लिक बॉन्ड (इन्विट/रीट सहित पब्लिक डेट)	कुल इक्विटी + बॉन्ड
2024-25	56,340	18,143	14,695	66,250	-	1,520	1,56,947	4,719	1,61,666
2023-24	29,036	-	15,534	24,748	-	8,426	77,744	12,592	90,335
2022-23	36,594	-	1,446	5,238	-	416	43,694	3,374	47,068
2021-22	52,325	-	11,511	17,276	-	8,795	89,907	8,685	98,592
2020-21	7,713	15,000	12,085	51,232	-	29,715	1,15,746	1,329	1,17,075
2019-20	8,674	11	10,590	17,430	-	2,306	39,012	8,559	47,571
2018-19	13,589	-	3,822	5,596	-	3,145	26,152	27,219	53,371
2017-18	27,555	-	11,794	30,581	4,668	7,283	81,881	3,896	85,777
2016-17	17,296	-	3,907	4,318	-	-	25,521	23,893	49,414
2015-16	4,950	-	12,916	12,428	-	-	30,294	2,302	32,595

(स्रोत: प्राइम डेटाबेस)

छमाही में आईपीओ बाजार दोगुना

आईपीओ की आँधी केवल एसएमई श्रेणी में नहीं, मुख्य एक्सचेंजों (मेन बोर्ड) में भी चल रही है। प्राइमडेटाबेस के आँकड़ों के अनुसार वित्त-वर्ष 2024-25 की पहली छमाही में 40 कंपनियों ने मेन बोर्ड आईपीओ से कुल 51,365 करोड़ रुपये की पूँजी जुटायी है, जो पिछले वित्त-वर्ष 2023-24 की पहली छमाही में आये 31 आईपीओ से अर्जित 26,311 करोड़ रुपये की पूँजी से 95% अधिक है।

प्राइमडेटाबेस समूह के प्रबंध निदेशक प्रणव हल्दिया के मुताबिक एफपीओ, ओएफएस और क्यूआईपी आदि सभी तरीकों से कुल सार्वजनिक इक्विटी पूँजी संग्रह (इक्विटी फंड रेजिंग) की राशि 2024-25 की पहली छमाही में 1,56,947 करोड़ रुपये रही है, जो 2023-24 की पहली छमाही में जुटाये गये 77,744 करोड़ रुपये से 102% अधिक है।

इसमें एक बड़ा योगदान क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल प्लेसमेंट (क्यूआईपी) का है, जिसमें केवल संस्थागत निवेशकों के बीच शेयर जारी किये जाते हैं। क्यूआईपी के माध्यम से इस वित्त-वर्ष की पहली छमाही में 66,225 करोड़ रुपये की राशि जुटायी गयी है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के 22,443 करोड़ रुपये से 195% अधिक है, यानी लगभग तिगुनी।

आईपीओ का यह सिलसिला हाल के महीनों में ज्यादा जोर पकड़ता दिखा है। पहली छमाही में मेन बोर्ड के 40 में से 22 आईपीओ सिर्फ अगस्त और सितंबर के दो महीनों में आये हैं।

सबसे ज्यादा पूँजी हाउसिंग फाइनेंस क्षेत्र से जुटायी गयी, जो 9,560 करोड़ रुपये या कुल इश्यू राशि का 19% है।

प्राइम डेटाबेस के अनुसार एसएमई श्रेणी की गतिविधियों में 2024-25 की पहली छमाही में भारी वृद्धि देखी गयी, जिसमें 143 एसएमई आईपीओ ने कुल 4,948 करोड़ रुपये जुटाये, जो पिछले साल इसी अवधि में 96 आईपीओ से अर्जित 2,724 करोड़ रुपये से 83% अधिक है। एसएमई श्रेणी में औसत निर्गम राशि (इश्यू एमाउंट) 5 साल पहले 2019-20 की पहली छमाही में 12 करोड़ थी। वहाँ से इसमें लगातार वृद्धि देखी गयी है और यह 2024-25 की पहली छमाही में 35 करोड़ रुपये हो गयी।

एसएमई श्रेणी में खुदरा निवेशकों की सहभागिता किस तरह बढ़ी है, इसका अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि खुदरा निवेशकों से प्राप्त आवेदनों की औसत संख्या 5 साल पहले, 2019-20 की पहली छमाही के केवल 468 आवेदनों की तुलना में बढ़ कर इस वित्त-वर्ष की पहली छमाही में 1.94 लाख हो गयी है। वैसे तो यह बात एसएमई श्रेणी में इक्विटी संस्कृति के स्वस्थ विकास की दृष्टि से बहुत अच्छी लगनी चाहिए। मगर बाजार का जैसा मिजाज बना हुआ है, उसमें यह आँकड़ा सावधान करने वाला लगता है।

एसएमई आईपीओ में औसत लिस्टिंग लाभ (लिस्टिंग तिथि के बंद भाव के आधार पर) 2023-24 की पहली छमाही में 41% था। इसकी तुलना में अप्रैल-सितंबर 2024 में यह

बढ़ कर 63% हो गया। इस अवधि में 131 में से 94 एसएमई आईपीओ वाले शेयरों का 30 सितंबर 2024 को बंद भाव उनके इश्यू भाव की तुलना में ऊपर रहा है। वहीं 30 सितंबर 2024 तक इनका औसत लाभ 92% रहा है।

अप्रैल-सितंबर 2024 के बीच आये एसएमई आईपीओ के लिए औसत आवेदन 208 गुना रहे, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 72 गुना आवेदन मिले थे। खुदरा निवेशकों के कोटे में औसत आवेदन इस वित्त-वर्ष की पहली छमाही में 262 गुना रहे, जबकि पिछले वर्ष समान अवधि में ये 101 गुना थे।

एसएमई पौधे को पेड़ बनना है तो...

एसएमई एक्सचेंजों का गठन इस विचार के साथ हुआ है कि देश में जो लाखों लघु और मध्यम उद्यम हैं, उन्हें अपने विस्तार के लिए इक्विटी पूँजी मिल सके। इस बारे में जब नियम बनाये गये, तो तीन बड़ी अड़चनों या संभावित समस्याओं को ध्यान में रखा गया। पहला यह कि एसएमई इकाइयाँ शेयर बाजार में आने से डर सकती हैं, क्योंकि यहाँ उन्हें काफी नियमों का पालन करना पड़ेगा और अपनी बहुत-सी जानकारियाँ लोगों के बीच सार्वजनिक करनी पड़ेंगी। शेयर बाजार में सूचीबद्ध कंपनियों को जितने नियमनों का अनुपालन करना होता है, और जिस तरह से हर तिमाही में अपने कारोबार का पूरा विवरण निवेशकों के बीच रखना होता है, वैसा करना शायद आम तौर पर लघु और मध्यम आकार के उद्यमों के लिए संभव नहीं हो।

मुख्य एक्सचेंजों (मेनबोर्ड) के आईपीओ

कैलेंडर वर्ष	आईपीओ की संख्या	राशि (करोड़ रु.)	वित्त-वर्ष	आईपीओ की संख्या	राशि (करोड़ रु.)
1989	102	216	1989-90	148	328
1990	111	316	1990-91	102	473
1991	126	564	1991-92	149	526
1992	332	1,323	1992-93	448	1,878
1993	564	3,144	1993-94	666	4,019
1994	1020	6,085	1994-95	1216	7,132
1995	1341	7,998	1995-96	1334	6,887
1996	1067	4,703	1996-97	660	4,082
1997	109	1,853	1997-98	51	883
1998	15	289	1998-99	18	379
1999	33	1,821	1999-00	51	2,587
2000	123	2,953	2000-01	109	2,375
2001	13	296	2001-02	6	1,013
2002	6	1,981	2002-03	6	1,039
2003	12	1,700	2003-04	19	3,191
2004	25	13,121	2004-05	23	14,662
2005	53	9,990	2005-06	76	10,798
2006	73	19,852	2006-07	76	23,706
2007	100	34,179	2007-08	84	41,323
2008	37	16,904	2008-09	21	2,034
2009	20	19,544	2009-10	39	24,948
2010	64	37,535	2010-11	52	33,098
2011	37	5,966	2011-12	33	5,886
2012	11	6,835	2012-13	9	6,289
2013	3	1,284	2013-14	1	919
2014	5	1,201	2014-15	8	2,770
2015	21	13,614	2015-16	24	14,500
2016	26	26,494	2016-17	25	28,225
2017	36	67,147	2017-18	45	81,553
2018	24	30,959	2018-19	14	14,719
2019	16	12,362	2019-20	13	20,350
2020	15	26,613	2020-21	30	31,268
2021	63	118,723	2021-22	53	111,547
2022	40	59,302	2022-23	37	52,116
2023	57	49,436	2023-24	76	61,922
2024 #	62	64,511	2024-25 #	40	51,391

(स्रोत : प्राइम डेटाबेस)

एसएमई एक्सचेंजों के आईपीओ

कैलेंडर वर्ष	एसएमई आईपीओ की संख्या	राशि (करोड़ रु.)	वित्त-वर्ष	एसएमई आईपीओ की संख्या	राशि (करोड़ रु.)
			2011-12	1	7
2012	14	103	2012-13	24	208
2013	35	335	2013-14	37	286
2014	40	267	2014-15	38	250
2015	43	260	2015-16	50	311
2016	67	537	2016-17	80	825
2017	133	1,679	2017-18	154	2,213
2018	141	2,287	2018-19	106	1,620
2019	51	624	2019-20	45	436
2020	27	159	2020-21	28	244
2021	59	746	2021-22	70	965
2022	109	1,875	2022-23	125	2,235
2023	182	4,686	2023-24	204	5,971
2024#	205	7,004	2024-25#	144	4,993
# 30 सितंबर 2024 तक					

दूसरे, इतनी छोटी कंपनियों में पैसा लगाने से निवेशक हिचकेंगे क्योंकि उनके कामकाज के बारे में विश्लेषण करना और भविष्य का अनुमान लगाना कठिन होगा। साथ ही, जो निवेशक इसमें आयेंगे भी, उनके लिए जोखिम काफी अधिक होगा। ऐसे में खास कर खुदरा निवेशक बिना अधिक जानकारी के ऐसे शेयरों में आ कर कहीं फँस न जायें, यह चिंता थी। तो ऐसे उद्यम शेरर बाजार में आने से डरें नहीं, इसके लिए एसएमई एक्सचेंजों में नियमन (रेगुलेशन) काफी सरल और ढीला-ढाला रखा गया। साथ ही, इनमें निवेश के लिए न्यूनतम सीमा 1 लाख रुपये की रखी गयी, जिससे बहुत छोटे निवेशक बिना उचित रिसर्च और मार्गदर्शन के इन शेयरों में आने से बचें।

एआरएम रिसर्च के ऑनली रूपानी कहते हैं, "एसएमई आईपीओ के लिए बहुत ढीला-ढाला नियमन जान-बूझ कर रखा गया था, क्योंकि इस श्रेणी में इक्विटी पूँजी आकर्षित करने और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए ऐसा जरूरी समझा गया। यह कुछ ऐसा ही था, जैसे स्कूल में पहली कक्षा से पहले केजी में छात्रों को बहुत नियमों में नहीं बाँधा जाता। पर इसके चलते अब अति हो रही है। लेकिन अगर नियमों को सख्त कर दिया गया तो अच्छे एसएमई भी इस बाजार में नहीं आ सकेंगे। इसके चलते यह दुविधा बन गयी है कि इस श्रेणी के लिए नियमन कैसा रखा जाये।"

हालाँकि पहले तो एसएमई एक्सचेंजों पर आने वाले शेयरों को लेकर बाजार में ज्यादा हलचल नहीं हुई, मगर जब से इस श्रेणी में हलचल बढ़ी है, तो साथ ही चिंताएँ भी बहुत बढ़ने लगी हैं। इस श्रेणी में संभावनाएँ तो अनंत हैं। जानकार कहते हैं कि हमारे देश में जो लाखों एसएमई इकाइयाँ हैं, उनमें से 20-50 हजार इकाइयाँ भी इस बाजार में अपना आईपीओ लाने की क्षमता रखती हैं।

यदि इन इकाइयों को शेयर बाजार से इक्विटी पूँजी जुटा कर अपना विस्तार करने का अवसर मिलता है, तो यह देश की अर्थव्यवस्था के लिए एक वरदान बन सकता है। पर यह सब तब होगा, जब इस बाजार का विकास एक व्यवस्थित तरीके से हो। यदि यह विकास एक बुलबुले की तरह होगा तो वह बुलबुला किसी-न-किसी दिन फूट जायेगा। और यदि यह विकास एक घोटाले की तरह से होगा, तो लाखों निवेशकों का भरोसा तोड़ देगा। दोनों ही स्थितियों में लाखों निवेशक इस बाजार से हमेशा के लिए दूर हो जायेंगे।

आईपीओ को लेकर जनता का जोश

प्राइमडेटाबेस के आँकड़ों से साफ दिखता है कि बीते महीनों में आईपीओ बाजार को लेकर जनता की प्रतिक्रिया बहुत उत्साह से भरी रही है। इस वित्त-वर्ष की पहली छमाही में अब तक 38 आईपीओ के उपलब्ध आँकड़ों को देखें, तो इनमें से 35 आईपीओ को शानदार प्रतिक्रिया मिली है। इन सबमें कम-से-कम 10 गुना आवेदन मिले, और 17 आईपीओ को तो 50 गुना तक आवेदन मिले। बाकी बचे 3 में से 2 आईपीओ को भी तिगुने से अधिक आवेदन मिले।

अगर हम 2023-24 की पहली छमाही से तुलना करें, तो इस वित्त-वर्ष की पहली छमाही में खुदरा निवेशकों की सहभागिता जबरदस्त ढंग से बढ़ी है। खुदरा (रिटेल) निवेशकों के आवेदनों की औसत संख्या 2023-24 की पहली छमाही में दोगुनी से अधिक होकर 20.91 लाख हो गयी, जबकि पिछले साल इसी अवधि में यह संख्या 9.67 लाख थी। खुदरा निवेशकों के सबसे अधिक आवेदन बजाज हाउसिंग फाइनेंस (58.66 लाख) के आईपीओ को मिले। उसके बाद आर्केड डेवलपर्स (45.37 लाख) और नॉर्डन आर्क (45.13 लाख) का स्थान रहा।

आवेदनों की राशि पर नजर डालें, तो खुदरा निवेशकों ने इस वित्त-वर्ष की पहली छमाही में 1.58 लाख करोड़ रुपये के शेयरों के लिए आवेदन किया, जो सभी आईपीओ में जुटायी गयी कुल पूँजी से 211% अधिक है। वित्त-वर्ष 2023-24 की पहली छमाही में अर्जित पूँजी की तुलना में 124% अधिक के आवेदन मिले थे। यह इस अवधि में खुदरा निवेशकों के उत्साह के ऊँचे स्तर को दर्शाता है।

हल्दिया के मुताबिक आईपीओ को लेकर जनता के इस अति-उत्साह के पीछे लिस्टिंग के समय का मजबूत प्रदर्शन रहा है। औसत लिस्टिंग लाभ (लिस्टिंग के दिन बंद भाव के आधार पर) पिछले वित्त-वर्ष में अप्रैल-सितंबर की अवधि में



28.65% था, जो 2024-25 की पहली छमाही में बढ़ कर 34.28% हो गया। अगर अब तक सूचीबद्ध 38 आईपीओ को देखें तो इनमें से 30 आईपीओ ने 10% से ज्यादा का प्रतिफल लिस्टिंग के दिन दिया। बजाज हाउसिंग फाइनेंस ने लिस्टिंग के दिन 136% का शानदार लाभ दिया, जिसके बाद यूनिकॉमर्स ईसॉल्यूशंस (94%) और प्रीमियर एनर्जीज (87%) का स्थान रहा। इन 38 में से 30 आईपीओ के शेयर 30 सितंबर 2024 के बंद भाव के आधार पर अपने इश्यू मूल्य से ऊपर के भाव पर चल रहे हैं और अगर 30 सितंबर 2024 तक इन 38 आईपीओ का औसत लाभ देखें तो यह 41.80% बैठता है।

इस तरह के प्रदर्शन के बीच आईपीओ को लेकर जनता का अति-उत्साह स्वाभाविक ही कहा जायेगा। केवल चंद दिनों के अंदर यदि 34.28% लाभ मिल रहा हो, तो किसे लालच नहीं होगा? हालाँकि एक बात कही जाती है कि अब आईपीओ में शेयर आवंटित होना लॉटरी खुलने से कम नहीं है, क्योंकि जब इस तरह पचास गुना या सैंकड़ों गुना आवेदन होंगे, तो 100-50 में किसी एक को ही आवंटन मिलेगा।

मगर यह बात लोगों को आवेदन करने से रोकती नहीं है। कारण यह है कि एस्बा की पद्धति लागू होने के बाद आईपीओ के लिए आवेदन करते समय निवेशकों के बैंक खाते से पैसे कटते नहीं हैं, केवल आईपीओ प्रक्रिया पूरी होने तक के लिए खाते में अवरुद्ध हो जाते हैं, यानी आप वह पैसा खाते से निकाल नहीं सकते। यानी पैसे खाते में ही पड़े हैं, उस पर आपको ब्याज (भले ही 3-4%) भी मिल ही रहा है, तो आईपीओ में

शेयर मिल गये तो लॉटरी, नहीं मिले तो नुकसान कुछ नहीं!

बजाज हाउसिंग आईपीओ सबसे बड़ा

मुख्य एक्सचेंजों (मेन बोर्ड) में 2024-25 की पहली छमाही में सबसे बड़ा आईपीओ बजाज हाउसिंग फाइनेंस (6,560 करोड़ रुपये) का था। इसके बाद ओला इलेक्ट्रिक (6,146 करोड़ रुपये) और भारती हेक्साकॉम (4,275 करोड़ रुपये) का स्थान रहा। दूसरी तरफ, सबसे छोटा आईपीओ क्रोनॉक्स लैब का था, जिसने महज 130 करोड़ रुपये जुटाये। इस वित्त-वर्ष में पहली छमाही में आये सभी मेन बोर्ड आईपीओ का औसत आकार 1,284 करोड़ रुपये रहा, जो पिछले वित्त-वर्ष की समान अवधि में 849 करोड़ रुपये से अधिक था।

हल्दिया के अनुसार, नये दौर की तकनीकी कंपनियों (न्यू एज टेक कंपनी या एनएटीसी) ने दो शांत वर्षों के बाद 5 आईपीओ के साथ वापसी की और कुल 8424 करोड़ रुपये जुटाये। ये 5 आईपीओ ऑफिस स्पेस सॉल्यूशंस, डिजिट इंश्योरेंस, ब्रेनबीज सॉल्यूशंस (फर्स्टक्राइ), ला ट्रेवेन्यूज टेक्नोलॉजी (इक्सिगो) और यूनिकॉमर्स ईसॉल्यूशंस के थे। सबसे बड़ा एसएमई आईपीओ सहस्र इलेक्ट्रॉनिक सॉल्यूशंस का था, जिसने 168.08 करोड़ रुपये की पूँजी इस बाजार से हासिल की।

अगली छमाही में आईपीओ बाजार

आँकड़े बताते हैं कि आईपीओ बाजार में आगे भी काफी बड़ी कतार है। लगभग 72,000 करोड़

निवेश नहीं हो रहा, लॉटरी चल रही है



देविना मेहरा

सीएमडी, फर्स्ट ग्लोबल

रुपये जुटाने के लिए 26 कंपनियों को बाजार नियामक सेबी की मंजूरी मिल चुकी है, जबकि 55 कंपनियाँ 89,000 करोड़ रुपये जुटाने के लिए सेबी की मंजूरी का इंतजार कर रही हैं। इन 81 कंपनियों में से 3 नये दौर की टेक कंपनियाँ (एनएटीसी) हैं, जो तकरीबन 13,000 करोड़ रुपये जुटाना चाहती हैं। हल्दिया के मुताबिक, अगर कोई अप्रत्याशित घटना नहीं होती है, तो आईपीओ के लिए यह पिछले रिकॉर्ड ध्वस्त करने वाला साल होगा।

सोच कर, समझ कर, निवेश कर

देश का प्रमुख स्टॉक एक्सचेंज एनएसई अक्सर ही निवेशकों को इस सूत्र-वाक्य के साथ सचेत करता रहता है कि सोच कर, समझ कर, निवेश कर। मगर आईपीओ बाजार में इस समय निवेशक न सोच रहे हैं, न समझ रहे हैं, न ही निवेश कर रहे हैं। वे केवल चंद दिनों के लिए एक लॉटरी में हिस्सा लेने की मानसिकता के साथ इस खेल में उतर रहे हैं, कि लगी तो ठीक नहीं तो नुकसान क्या!

अब तक यह पार्टी चल रही है, लेकिन जिस दिन पार्टी का संगीत बजना बंद होगा, उस दिन बहुत-से निवेशक स्वयं को अनचाहे शेरों में फँसा हुआ पायेंगे। शेर बाजार का इतिहास न जाने कितनी बार इसी तरह के चक्र दिखा चुका है, पर हर बार नये निवेशकों की पौध लालच में आकर इस खेल में फँसती ही है।

आईपीओ लाना शेर बाजार के चलने की एक मूलभूत प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य यह रहता है कि कंपनी चलाने वालों को विस्तार के लिए पूँजी मिले और पूँजी देने वाले निवेशकों एवं आम जनता को उस कंपनी के स्वामित्व या इक्विटी का एक हिस्सा मिले, जिससे भविष्य में कंपनी का कारोबार और मुनाफा बढ़ने का लाभ उन्हें भी मिले। आईपीओ से शेर बाजार का विस्तार होता है और निवेशकों को नये अवसर मिलते हैं।

पर जब कोई आईपीओ आता है, तो निवेशकों को यह देखना होता है कि भविष्य में उस कंपनी का कारोबार बढ़ने की कितनी संभावनाएँ हैं। साथ ही यह आकलन करना पड़ता है कि क्या अपनी वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाओं को देखते हुए कंपनी अपने आईपीओ में उचित भाव पर शेर जारी कर रही है?

मगर इन सब बातों का विचार करके, सोच-समझ कर निवेश करने के बदले यदि निवेशक इसे 5 दिन की लॉटरी के रूप में लेने लगे, तो निश्चित रूप से यह बाजार से जुड़े हर व्यक्ति के लिए चिंता का विषय होना चाहिए।

आईपीओ बाजार अब निश्चित रूप से अति की सीमा में प्रवेश करने लगा है। जितनी पूँजी जुटायी जा रही है, वह सामान्य से बहुत अधिक है। केवल अगस्त 2024 के महीने में ही जुटायी गयी पूँजी जनवरी से अगस्त 2023 के 8 महीनों में जुटायी गयी पूँजी से अधिक रही है। वह रफ्तार इस सितंबर महीने में भी जारी है। और, इस पर स्थिति यह है कि हरेक इश्यू में बहुत अधिक आवेदन (सब्सक्रिप्शन) आ रहे हैं।

सेबी के आँकड़े बताते हैं कि आईपीओ में आवंटन पाने वालों में से लगभग 50% व्यक्तिगत निवेशक (इंडिविजुअल इन्वेस्टर) पहले ही सप्ताह में उन शेरों को बेच लेते हैं। यदि आईपीओ भाव से 20% प्रीमियम पर लिस्टिंग हो तो दो-तिहाई व्यक्तिगत निवेशक बेच लेते हैं। और ये आँकड़े दिसंबर 2023 तक के ही हैं। उसके बाद से अब तक तो ये प्रतिशत आँकड़े और ऊपर ही गये होंगे।

मतलब यह है कि लोग कंपनी के शेर में निवेश नहीं कर रहे हैं। लोग आईपीओ प्रक्रिया को एक लॉटरी की तरह ले रहे हैं। इसलिए वे यह भी नहीं देख रहे हैं कि आईपीओ में भाव सही है या नहीं। वे केवल यह मान कर चल रहे हैं कि आगे कोई ज्यादा बड़ा मूख बैठा होगा, जो और भी ऊँचे भाव पर उनसे खरीद लेगा। पर गलती न करें, यह खतरनाक खेल है। यही कहानी भारत

में और दुनिया में दूसरी जगहों पर भी बार-बार दोहरायी गयी है।

हमने 1990 के दशक में ऐसे कई साल देखे हैं, जब 1300-1400 इश्यू तक आये थे। उनमें से बहुत सारी कंपनियाँ कहाँ गायब हो गयीं, इसका पता भी नहीं चला। इंग्लैंड, फ्रांस और अमेरिका में 18वीं और 19वीं सदी में इसी तरह से आईपीओ की बाढ़ आती रही।

जब चीजें इस तरह हद से ज्यादा गर्म हो जाती हैं, तो सामान्यतः इसका अंत बुरे ढंग से होता है। मेरा यह कहना नहीं है कि इस समय कोई अच्छा आईपीओ होगा ही नहीं। पर सामान्यतः ऐसी तेजी का मतलब यह होता है कि अच्छी कंपनियों के साथ-साथ कुछ एकदम बुरी और बेकार कंपनियाँ भी चली आती हैं। पहले से ही कुछ संदिग्ध किरदारों और चालबाजों के सक्रिय हो जाने की बातें सुनने और पढ़ने को मिल रही हैं!

याद रखें कि कुछ निवेशक संगठनों के अनुसार, 1,000 से भी अधिक भारतीय सूचीबद्ध (लिस्टेड) कंपनियाँ बस गायब हो गयी हैं। और, यह संख्या उन कंपनियों के अलावा है, जो चिंदी शेर (पेनी स्टॉक) बन चुकी हैं। कुछ साल बाद इस सूची में और बहुत-से नाम जुड़ जायेंगे। ऐसा लगता है कि हम फिर से उसी दिशा में बढ़ रहे हैं, जहाँ कंपनियों के प्रमोटर, निवेश बैंकर, ऑडिटर और शेर बाजार के ऑपरेटर—ये सभी लोग जल्दी और भारी मुनाफा कमाने के चक्कर में लगे हुए हैं। इसलिए, खरीदने वाले सावधान रहें।